आस्था बढ़ाना (2 का भाग 2): अपनी आस्था (ईमान) बढ़ाना और पुरस्कार अर्जित करना

रेटिंग:

विवरण: ?? ?????? ?? ??? ???? ????? ?? ?????? ?? ???? ?????? ?? ?? ???? ?????

श्रेणी: पाठ › बढ़ती आस्था › आस्था बढ़ाने के साधन

द्वारा: Aisha Stacey (© 2013 NewMuslims.com)

प्रकाशित हुआ: 08 Nov 2022

अंतिम बार संशोधित: 07 Nov 2022

उद्देश्य

- यह समझना कि कैसे इन सरल और प्रभावी ईमान बढ़ते वाले तरीकों को व्यवहार में लाया जाए।

अरबी शब्द

- *???* - याचना, प्रार्थना, अल्लाह से कुछ मांगना।
- *?????* - स्वैच्छिक दान।
- *????* - आस्था, विश्वास या दृढ़ विश्वास।

क्योंकि अल्लाह हमारा निर्माता है और वह मनुष्य के स्वाभाव को जानता है, और हमें मार्गदर्शन प्रदान किया है जो हमारे लिए आसान है। स्वाभाविक रूप से हम अपनी आस्था के स्तर (ईमान) और भक्ति को बिना किसी पैटर्न या स्पष्ट कारण के अक्सर बढ़ते और घटते देखते हैं। दूसरी ओर पापपूर्ण व्यवहार में लिप्त होना हमारे ईमान को कभी-कभी काफी तेजी से कम कर देता है। हमारी जरूरतों के अनुसार, अल्लाह ने हमें अपनी आस्था बढ़ाने के लिए कई साधन दिए हैं, और हमारी विभिन्न क्षमताओं के अनुरूप वे विविध हैं। किसी व्यक्ति के पास अपनी स्वैच्छिक प्रार्थनाओं को बढ़ाने की क्षमता हो सकती है, दूसरे के लिए उपवास करना आसान हो सकता है और अन्य के पास अधिक दान देने का साधन हो सकता है।

कम होती हुई आस्था को बढ़ाने के आठ तरीके

1.अल्लाह को उसके नाम और गुणों के माध्यम से जानना

विश्वासियों को अल्लाह को याद करने और हर समय उसके प्रति आभारी रहने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है और उसके सुंदर नामों पर विचार करना और समझना ऐसा करने का एक आसान लेकिन लाभकारी तरीका है। इन नामों के माध्यम से, हम अपने निर्माता को जान सकते हैं और सीख सकते हैं कि उसकी स्तुति और पूजा कैसे करना है, और अपनी जरूरतों के अनुसार उसे किन नामों से पुकारना है। "**आप कह दें कि (अल्लाह) कहकर पुकारो अथवा (रह़मान) कहकर पुकारो, जिस नाम से भी पुकारो, उसके सभी नाम शुभ हैं...**" **(क़ुरआन 17:110)**

2.ब्रह्मांड में अल्लाह की निशानियों पर विचार करना

“तथा धरती में बहुत-सी निशानियां हैं विश्वास करने वालों के लिए। तथा स्वयं तुम्हारे भीतर भी। फिर क्यों तुम देखते नहीं?” (क़ुरआन 51:20-21)। पूरा ब्रह्मांड अल्लाह की एकता की गवाही देता है। ब्रह्मांड का चिंतन करते समय, रेत के बेहतरीन दाने से लेकर शक्तिशाली और राजसी पहाड़ों तक, व्यक्ति अल्लाह की महिमा को देखने में सक्षम है। यह विशाल ब्रह्मांड एक सटीक प्रणाली के अनुसार चल रहा है, सब कुछ अपने सही स्थान पर, सही अनुपात में बनाया गया है।

3.कोई भी समय मिलने पर दुआ करना

दुआ उत्थान, सशक्तिकरण, मुक्ति और परिवर्तन है और यह मनुष्य के लिए पूजा के सबसे शक्तिशाली और प्रभावी कृत्यों में से एक है। दुआ को आस्तिक का हथियार कहा गया है। यह सभी प्रकार की मूर्तिपूजा या बहुदेववाद को त्यागकर सिर्फ अल्लाह में एक व्यक्ति के विश्वास की पुष्टि करता है। "**जब मेरे भक्त मेरे विषय में आपसे प्रश्न करें, तो उन्हें बता दें कि निश्चय मैं समीप हूं। मैं प्रार्थी की प्रार्थना का उत्तर देता हूं। अतः, उन्हें भी चाहिये कि मेरे आज्ञाकारी बनें तथा मुझपर ईमान (विश्वास) रखें, ताकि वे सीधी राह पायें” (क़ुरआन 2:186)**

4.अल्लाह को याद करना

क़ुरआन मे कई ऐसे छंद है जो हमें अल्लाह को जितनी बार संभव हो याद करने की सलाह देता है।

"...सुन लो! अल्लाह के स्मरण ही से दिलों को संतोष होता है।" (क़ुरआन 13:28)

"ऐ विश्वासियों! तुम्हें अचेत न करें तुम्हारे धन तथा तुम्हारी संतान अल्लाह के स्मरण (याद) से..." (क़ुरआन 63:09)

" हे विश्वासियों! याद करते रहो अल्लाह को, अत्यधिक। तथा पवित्रता बयान करते रहो उसकी प्रातः तथा संध्या।" (क़ुरआन 33:41-42)

याद करने के कृत्यों से अल्लाह को याद करने से अमन और शांति मिलिती है। कुछ लाभकारी वाक्यांशों में शामिल हैं:

सुभानअल्लाह - अल्लाह कितना धन्य है!

अल्हम्दुलिल्लाह - सभी प्रशंसा और धन्यवाद अल्लाह के लिए है।

अल्लाहु अकबर - अल्लाह सबसे महान है।

ला इलाहा इल्ललाह - अल्लाह के सिवा कोई पूजा के लायक नही।

5.क़ुरआन को सुनाना, पढ़ना या सुनना

क़ुरआन शरीर और आत्मा के लिए एक उपचार है। जब भी जीवन बहुत कठिन हो जाता है या हम चोट, बीमारी या दुख से घिरे होते हैं, क़ुरआन हमारे रास्ते को रोशन करता है और हमारे बोझ को हल्का करता है। यह आराम और चैन का स्रोत है। आज दुनिया में बहुत से लोगों के पास अथाह धन और विलासिता है लेकिन संतोष कम है। क़ुरआन हमारे दिल, दिमाग और आत्मा को भरता है और हमारी आस्था को बढ़ाता है। पैगंबर मुहम्मद ने क़ुरआन के शिक्षकों को बाहरी जनजातियों और दूर के शहरों में भेजा और कहा कि उनके सबसे अच्छे अनुयायी वे थे जिन्होंने क़ुरआन को सीखा और फिर इसे दूसरों को सिखाया। [1]

6.इस्लाम का सही ज्ञान प्राप्त करना

ज्ञान प्राप्त करने से आस्तिक अपने आसपास की दुनिया को देख सकता है और सृष्टि के चमत्कारों पर विचार कर सकता है। सही और प्रामाणिक ज्ञान आस्था को मजबूत करता है और उस ज्ञान को लागू करने से व्यक्ति को समर्पण और निश्चितता के साथ पूजा करने मे सक्षम होता है। "**और इसलिए भी ताकि विश्वास हो जाये उन्हें, जो ज्ञान दिये गये हैं कि ये (क़ुरआन) सत्य है आपके पालनहार की ओर से और इसपर विश्वास करें और इसके लिए झुक जायें उनके दिल, और निःसंदेह अल्लाह ही पथ प्रदर्शक है उनका, जो ईमान लायें सुपथ की ओर।" (क़ुरआन 22:54)**

7.स्वैच्छिक कार्य अधिक करें जैसे अच्छे कर्म करना, और सदक़ा देना

आस्था को बढ़ाने के सर्वोत्तम तरीकों में से एक है अच्छे कर्म करना। "**जो भी सदाचार करेगा, वह नर हो अथवा नारी और ईमान वाला हो, तो हम उसे स्वच्छ जीवन व्यतीत करायेंगे और उन्हें उनका पारिश्रमिक उनके उत्तम कर्मों के अनुसार अवश्य प्रदान करेंगे (यानी परलोक मे स्वर्ग)" (कुरआन 16:97)**

हम जितना अधिक अच्छे कर्म करेंगे, उतना ही हम अपने ईमान को बढ़ायेंगे और इस प्रकार, इस दुनिया और परलोक दोनों में अल्लाह के प्रतिफल की उम्मीद रखेंगे।

*8.*अच्छे साथियों की तलाश

इस्लाम में दोस्ती और भाईचारा अहम है। एक अच्छा दोस्त वह होता है जो आपकी गलतियों को समायोजित करता है लेकिन जहां संभव हो उन्हें सुधारता है। अपने आस-पास के लोगों से प्रभावित होना और उनके तौर-तरीकों और गुणों को जाने बिना भी उन्हें अपनाना आसान है। अगर ये अच्छे गुण हैं तो अच्छी बात है लेकिन क्या होगा अगर आप जिन लोगों की बात कर रहे हैं वो आपका ईमान कम कर रहे हो? यह एक आपदा हो सकती है, और ईश्वर क़ुरआन मे इसके बारे में चेतावनी देता है। "**उस दिन, अत्याचारी अपने दोनों हाथ चबायेगा, वह कहेगाः क्या ही अच्छा होता कि मैंने दूत का साथ दिया होता। हाय मेरा दुर्भाग्य! काश मैंने अमुक को मित्र न बनाया होता। उसने मुझे कुपथ कर दिया शिक्षा (क़ुरआन) से...'" (क़ुरआन 25:27-28-29)**

फुटनोट:

[1]	सहीह मुस्लिम

इस लेख का वेब पता

https://www.newmuslims.com/index.php/hi/articles/190

कॉपीराइट © 2011 - 2024 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।